Impact Factor (QJIF): 8.47 E-ISSN: 2583-1615, P-ISSN: 3049-3498

International Journal of Research in Academic World

Received: 04/February/2026 **IJRAW:** 2026; 5(3):296-299 **Accepted:** 15/March/2026

युवाओं का सामाजिक विचलनः आगरा शहर का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

[1]धर्मेन्द्र सिंह और *[2]डॉ. प्रेमलता प्रभारी

[1]शोध निर्देशन, समाजशास्त्र विभाग, दाऊ दयाल महिला पी.जी. कॉलेज, फिरोजाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

*[2]प्रोफ़ेसर, समाजशास्त्र विभाग, दाऊ दयाल महिला पी.जी. कॉलेज, फिरोजाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश

वर्तमान समय में सामाजिक परिवर्तन की तीव्र गति ने युवाओं के जीवन को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। युवावस्था जीवन का वह महत्वपूर्ण चरण है, जिसमें व्यक्ति सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन से गहराई से प्रभावित होता है। इन परिवर्तनों के परिणामस्वरूप युवाओं में सामाजिक विचलन की प्रवृत्तियाँ विकसित हो रही हैं, जो समाज के लिए गंभीर चिंता का विषय है। प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य युवाओं में सामाजिक विचलन के कारणों, स्वरूप एवं प्रभावों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करना है। इस अध्ययन में यह समझने का प्रयास किया गया है कि किन सामाजिक, आर्थिक एवं पारिवारिक परिस्थितियों के कारण युवा सामाजिक मानदंडों से विचलित होते हैं। इसके अतिरिक्त अध्ययन में आधुनिक तकनीकी एवं संचार माध्यमों के प्रभाव का भी विश्लेषण किया गया है।

मुख्य शब्द: युवा, औद्योगीकरण, वैश्वीकरण, उदारीकरण पारंपरिक सामाजिक नियंत्रण,सामाजिक विचलन नैतिक मूल्यों।

प्रस्तावना

समाज एक गतिशील एवं निरंतर परिवर्तनशील व्यवस्था है, जिसमें व्यक्ति, समूह तथा संस्थाएँ परस्पर अंतःक्रिया के माध्यम से सामाजिक संरचना का निर्माण करती हैं। समाज की निरंतरता एवं प्रगति में विभिन्न वर्गों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है, किंतु इनमें युवा वर्ग सर्वाधिक ऊर्जावान, सृजनशील तथा परिवर्तनकारी शक्ति के रूप में उभरकर सामने आता है। किसी भी समाज का भविष्य उसके युवाओं की सामाजिक चेतना, नैतिक मूल्यों तथा व्यवहार प्रतिमानों पर निर्भर करता है। आगरा—जो न केवल एक ऐतिहासिक और पर्यटन स्थल है, बल्कि तेजी से शहरीकरण और औद्योगीकरण का केंद्र भी है—वहाँ की बदलती जीवनशैली, पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव, और आर्थिक विषमताएं युवाओं के व्यवहार को प्रभावित कर रही हैं। शहरी क्षेत्रों में बेरोजगारी, एकल परिवार, और पीयर प्रेशर (साथियों का दबाव) युवाओं को विचलित करने के प्रमुख कारक बनते जा रहे हैं।

यह अध्ययन आगरा शहर के सामाजिक-सांस्कृतिक परिदृश्य में युवाओं के व्यवहार में आ रहे नकारात्मक बदलावों, उनके कारणों (जैसे परिवार का टूटना, गरीबी, खराब संगति) और सामाजिक परिणामों का विश्लेषण करने का एक समाजशास्त्रीय प्रयास है। यह जांचने की कोशिश की जा रही है कि कैसे एक प्राचीन शहर के आधुनिक होते माहौल में युवा अपनी पहचान खो रहे हैं और सामाजिक विचलन का शिकार हो रहे हैं। वर्तमान युग तीव्र सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तनों का युग है। औद्योगीकरण, नगरीकरण, वैश्वीकरण, उदारीकरण तथा सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के विकास ने सामाजिक जीवन को गहराई से प्रभावित किया है। इन परिवर्तनों का प्रभाव सर्वाधिक युवाओं पर पड़ा है। एक ओर जहाँ आधुनिकता ने युवाओं को नए अवसर प्रदान किए हैं, वहीं दूसरी ओर पारंपरिक सामाजिक नियंत्रण, नैतिक मूल्यों एवं पारिवारिक संरचना में आई शिथिलता ने युवाओं को सामाजिक विचलन की ओर भी अग्रसर किया है। आज भारतीय समाज में युवाओं से संबंधित अनेक समस्याएँ जैसे अपराध, नशाखोरी, बेरोजगारी, हिंसा, अनुशासनहीनता, साइबर अपराध, राजनीतिक उग्रता एवं नैतिक पतन तेजी से बढ़ रही हैं। यह स्थिति सामाजिक संतुलन के लिए गंभीर चुनौती प्रस्तुत करती है। इस संदर्भ में युवाओं के सामाजिक विचलन का अध्ययन समाजशास्त्रीय दृष्टि से अत्यंत आवश्यक हो जाता है। भारत में युवा विचलन (Juvenile Delinquency) की स्थिति अधिक जटिल है, जहाँ पारंपरिक और आधुनिक कारण आपस में मिले हुए हैं:किसी भी देश व समाज को बनाये या बिगाड़ने में देश के युवा वर्ग की मुख्य भूमिका होती है। युवावस्था उम्र की यह अवधि है जो ताकत एवं खुद के लिए कुछ भी करने की भावना के साथ बढ़ता है। हर स्थित्तियों के लिए युवाओं का एक अलग दृष्टिकोण होता है। संयुक्त राष्ट्र के मुताबिक भारत दुनिया का एक ऐसा देश है। जहाँ सबसे ज्यादा युवा रहते है। युवा अपार क्षमताओं से भरा होता है। युवा वर्ग और उनकी उपलब्धियाँ हर देश की सफलता का आधार होती है। 'युवा' शब्द को सुनते वा पढ़ते ही हमारे मन-मस्तिष्क में एक सुन्दर, लम्बे-चौड़े व मजबूत शरीर की

***Corresponding Author:** डॉ. प्रेमलता प्रभारी

काल्पनिक छवि उभरने लगती है। युवा वह अवस्था होती है जब कोई बाल्यावस्था को छोड़कर धीरे-धीरे वयस्यकता (Adult) की ओर बढ़ता है इसकी उम्र सीमा लगभग 18-30 वर्ष मानी गई है। अधिकांश युवाओं में एक जवान बच्चे की जिज्ञासा और जोश और एक व्यस्क के ज्ञान की उत्तेजना होती है। युवाओं की छवि ज्यादा तरह हमेशा से आक्रामक रही है। उन्हें उत्तेजक, फुर्तीला, बागी मिजाज माना जाता रहा है युवा वर्ग राष्ट्र की रीढ़ होती है उनका मनोबल, उनकी क्षमताएं उनका साहस असीम है। यवाओं के इस जोशीले अंदाज का फायदा समाज को हमेशा ही आन्दोलन, युद्धभूमि, देख को विकसित्त करने की राह पर मिला। युवा शक्ति बहुत ही तीव्र व मजबूत इरादों वाली होती है। युवा यदि ठान ले तो दुनियाँ का नक्शा बदल सकता है। अतः हर देश की उन्नति एवं विकास युवा पीढ़ी के बिना अधूरा है। भारत की कुल आबादी का लगभग 65 प्रतिशत युवा है। भारत में प्रत्येक वर्ष 12 जनवरी को "राष्ट्रीय युवा दिवस के रुप में मनाया जाता है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (NCRB) के अनुसार, अधिकांश अपराधों में युवाओं की भूमिका महत्वपूर्ण है। इसमें चोरी, मारपीट, और यौन अपराध शामिल हैं।

साहित्य समीक्षा

जॉन डेवी (1916) के अनुसार, शिक्षा समाजीकरण का प्रमुख माध्यम है। किंतु जब शिक्षा प्रणाली युवाओं की सामाजिक एवं आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर पाती, तो वह विचलन को रोकने में असफल हो जाती है। भारतीय अध्ययनों में यह पाया गया है कि शिक्षा और रोजगार के बीच असंतुलन युवाओं में निराशा एवं असंतोष उत्पन्न करता है, जो आगे चलकर विचलन का कारण बनता है। एमाइल दुर्खीम (1938) ने 'एनॉमी' की अवधारणा प्रस्तुत करते हुए बताया कि सामाजिक नियमों की कमजोरी व्यक्ति को विचलन की ओर ले जाती है। सामाजिक विचलन के प्रारंभिक व्याख्याकारों में से एक माने जाते हैं। 'एनॉमी' की अवधारणा प्रस्तुत करते हुए यह स्पष्ट किया कि जब समाज में सामाजिक नियम, मूल्य एवं मान्यताएँ कमजोर पड़ जाती हैं, तो व्यक्ति दिशाहीन हो जाता है। ऐसी स्थिति में सामाजिक नियंत्रण शिथिल हो जाता है और विचलन की प्रवृत्तियाँ उत्पन्न होती हैं। युवाओं के संदर्भ में यह सिद्धांत अत्यंत प्रासंगिक है। तीव्र सामाजिक परिवर्तन, नगरीकरण एवं आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में युवा पारंपरिक मूल्यों और आधुनिक अपेक्षाओं के बीच फँस जाते हैं। परिणामस्वरूप उनमें असंतोष, तनाव एवं विचलन की प्रवृत्तियाँ विकसित हो जाती हैं।हावर्ड बेकर का लेबलिंग सिद्धांत (1963) के अनुसार, विचलन कोई जन्मजात गुण नहीं है, बल्कि यह सामाजिक प्रतिक्रिया का परिणाम होता है। जब समाज किसी व्यक्ति को 'विचलित' का लेबल दे देता है, तो वह व्यक्ति उसी पहचान को आत्मसात कर लेता है। युवाओं के संदर्भ में यह सिद्धांत विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि प्रारंभिक स्तर पर लगाए गए सामाजिक लेबल उन्हें स्थायी विचलन की ओर धकेल सकते हैं। विलियम गूड (1964) अध्ययन में पारिवारिक विघटन को युवाओं के विचलन का प्रमुख कारण बताया है। भारतीय संदर्भ में इरा डे और लीला दुबे के अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि पारिवारिक कलह, माता-पिता की अनुपस्थिति तथा अनुशासन की कमी युवाओं में असुरक्षा एवं असंतोष को जन्म देती है। पारिवारिक पृष्ठभूमि का प्रभाव युवाओं की नैतिकता, सामाजिक दृष्टिकोण एवं व्यवहार पर प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है।

मर्टन (1968) के अनुसार, संरचनात्मक तनाव सिद्धांत समाज सभी व्यक्तियों के लिए समान सांस्कृतिक लक्ष्य निर्धारित करता है, किंतु उन्हें प्राप्त करने के साधन सभी को समान रूप से उपलब्ध नहीं कराता। इस असंतुलन के परिणामस्वरूप तनाव उत्पन्न होता है, जो सामाजिक विचलन को जन्म देता है। युवाओं में बेरोजगारी, आर्थिक असमानता एवं सीमित अवसर इस तनाव को और अधिक बढ़ाते हैं। आगरा शहर में भी शिक्षा एवं रोजगार के बीच असंतुलन युवाओं के विचलन का एक प्रमुख कारण माना जा सकता है।

अध्ययन के उद्देश्य (Research Objectives)

प्रस्तुत अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

i) युवाओं के सामाजिक विचलन के कारणों का अध्ययन करना।
ii) युवाओं के वैयक्तिक, पारिवारिक व सामाजिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
iii) युवाओं के राजनैतिक, शैक्षिक और आर्थिक परिवेश का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएं (Research Hypothesis)

i) युवाओं के सामाजिक विचलन के कारणों में भिन्नता है।
ii) युवाओं के वैयक्तिक, परिवारिक व सामाजिक पृष्ठभूमि में अन्तर पाया गया है।
iii) युवाओं के राजनैतिक, शैक्षिक एवं आर्थिक परिवेश प्रायः मध्यम एवं निम्न स्थिति की होती है।

अध्ययन क्षेत्र के विषय क्षेत्र

प्रस्तुत शोध का विषय युवाओं में सामाजिक विचलन की समस्या का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करना है। सामाजिक विचलन एक ऐसी सामाजिक प्रक्रिया है, जो समाज द्वारा स्वीकृत मूल्यों, नियमों एवं व्यवहार प्रतिमानों से विचलन को दर्शाती है। आधुनिक समाज में सामाजिक संरचना, आर्थिक असमानता, तकनीकी विकास तथा सांस्कृतिक परिवर्तन के कारण युवाओं के व्यवहार में उल्लेखनीय परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं। इन परिवर्तनों के परिणामस्वरूप युवाओं में सामाजिक विचलन की प्रवृत्तियाँ बढ़ती जा रही हैं, जो समाज के लिए एक गंभीर चुनौती के रूप में उभर रही हैं। इस अध्ययन का विषय क्षेत्र विशेष रूप से आगरा शहर में निवास करने वाले युवाओं के सामाजिक जीवन, पारिवारिक परिवेश, आर्थिक स्थिति, शैक्षिक पृष्ठभूमि तथा राजनीतिक एवं सांस्कृतिक प्रभावों का विश्लेषण करना है। आगरा शहर ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं पर्यटन दृष्टि से महत्वपूर्ण होने के साथ-साथ तीव्र नगरीकरण की प्रक्रिया से गुजर रहा है। नगरीकरण के कारण सामाजिक संरचना में परिवर्तन, पारिवारिक नियंत्रण में कमी, प्रतिस्पर्धा की वृद्धि तथा उपभोक्तावादी संस्कृति का विस्तार युवाओं के व्यवहार को प्रभावित कर रहा है।

शोध प्ररचना (Research Design): किसी भी अध्ययन की रूपरेखा शोध प्ररचना होती है, जिसके माध्यम से शोध कार्य को व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक ढंग से संचालित किया जाता है। प्रस्तुत अध्ययन में उद्देश्य पूर्ण तरीके से वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध प्ररचना का प्रयोग किया गया है। वर्णनात्मक शोध प्ररचना के अंतर्गत युवाओं के सामाजिक विचलन की वर्तमान स्थिति का विवरण प्रस्तुत किया गया है, जबकि विश्लेषणात्मक शोध प्ररचना के माध्यम से सामाजिक विचलन के कारणों एवं प्रभावों का विश्लेषण किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में वैज्ञानिक तरीके से गुणात्मक एवं मात्रात्मक दोनों प्रकार के शोध दृष्टिकोणों का समन्वय किया गया है। गुणात्मक दृष्टिकोण से युवाओं के विचारों, अनुभवों एवं सामाजिक दृष्टिकोण को समझने का प्रयास किया गया है,जबकि मात्रात्मक दृष्टिकोण से प्राप्त आँकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया है।

अध्ययन का यूनिवर्स: किसी भी शोध में यूनिवर्स या समग्र (Universe) का निर्धारण अत्यंत महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि यही वह क्षेत्र होता है जिससे संबंधित सभी इकाइयाँ अध्ययन के अंतर्गत आती हैं। प्रस्तुत अध्ययन का यूनिवर्स आगरा शहर में निवास करने वाले 18 से 30 वर्ष आयु वर्ग के युवा हैं। यह आयु वर्ग सामाजिक,

मानसिक एवं आर्थिक दृष्टि से अत्यंत संवेदनशील माना जाता है, क्योंकि इसी अवस्था में व्यक्ति शिक्षा, रोजगार, सामाजिक पहचान एवं पारिवारिक उत्तरदायित्वों से संबंधित महत्वपूर्ण निर्णय लेता है।

निदर्शन का चयन: किसी भी शोध में शोध क्षेत्र के समस्त इकाइयों के अध्ययन की अपेक्षा कुछ इकाइयों का चयन कर उनका अध्ययन किया जाता है। इस प्रक्रिया की शोध-निदर्शन कहा जाता है। प्रति चयन इस मान्यता पर आधारित है, यह संपूर्ण समग्र में से कुछ इकाइयों का चयन इस प्रकार किया जाता है कि समग्र का प्रतिनिधित्व कर सके। प्रस्तुत शोध अध्ययन आगरा शहर के टेड़ी बगीचा और बुन्दुकट्टा (बगीची) को अध्ययन में सम्मिलित किया गया है। इस क्षेत्र के (बस्तियों) का चयन उद्देश्यपूर्ण निदर्शन (Purspesive Sampling Method) के आधार पर किया गया है। इस अध्ययन में इन बस्तियों के 18 वर्ष से 30 वर्ष आयु के 300 युवा उत्तरदाता पर आधारित होगा। उपरोक्त शोध अध्ययन प्रस्ताविक है। संपूर्ण यूनिवर्स का अध्ययन करना व्यवहारिक दृष्टि से संभव नहीं होता, इसलिए शोध में निदर्शन (Sample) का चयन किया जाता है। प्रस्तुत अध्ययन में उद्देश्यपरक निदर्शन विधि के अंतर्गत ऐसे युवाओं का चयन किया गया, जो अध्ययन की समस्या से प्रत्यक्ष रूप से संबंधित हैं। अध्ययन हेतु कुल 300 युवाओं को निदर्शन के रूप में चयनित किया गया।

अध्ययन का महत्व: प्रस्तुत अध्ययन युवाओं में सामाजिक विचलन की समस्या को समझने की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। वर्तमान समय में समाज तीव्र सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन की प्रक्रिया से गुजर रहा है, जिसका प्रभाव युवाओं के जीवन पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। इस अध्ययन के माध्यम से युवाओं के व्यवहार, सामाजिक परिस्थितियों एवं विचलन की प्रवृत्तियों का गहन विश्लेषण किया गया है। यह अध्ययन समाजशास्त्र के क्षेत्र में सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है। सैद्धांतिक स्तर पर यह अध्ययन सामाजिक विचलन से संबंधित विभिन्न समाजशास्त्रीय सिद्धांतों की पुष्टि एवं विस्तार करने में सहायक है। व्यावहारिक स्तर पर यह अध्ययन नीति निर्माताओं, शिक्षकों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं सांख्यिकी विधियों का महत्व: किसी भी सामाजिक शोध में आँकड़ों का विश्लेषण अत्यंत महत्वपूर्ण चरण होता है, क्योंकि इसी के माध्यम से शोध समस्या से संबंधित तथ्यों को वैज्ञानिक एवं तार्किक रूप में प्रस्तुत किया जाता है। प्रस्तुत अध्ययन में आगरा शहर के युवाओं से प्राप्त आँकड़ों का व्यवस्थित रूप से वर्गीकरण, सारणीकरण एवं विश्लेषण किया गया है। शोध के दौरान संकलित आँकड़ों को पहले विभिन्न श्रेणियों में विभाजित किया गया, जैसे— आयु, लिंग, शैक्षिक स्तर, आर्थिक स्थिति, पारिवारिक पृष्ठभूमि तथा सामाजिक परिवेश आदि। इसके पश्चात इन आँकड़ों को सारणीबद्ध किया गया, जिससे शोध परिणामों को स्पष्ट एवं सुव्यवस्थित रूप में प्रस्तुत किया जा सके।

तालिका 1: उत्तरदाताओं का आयु वर्ग के आधार पर वर्गीकरण

आयु वर्ग	संख्या	प्रतिशत
18–21 वर्ष	110	36.67%
22–25 वर्ष	105	35.00%
26–30 वर्ष	85	28.33%
कुल	300	100%

तालिका 1 उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं में 18 से 21 वर्ष आयु वर्ग के युवाओं की संख्या सर्वाधिक है। यह आयु वर्ग युवावस्था का प्रारंभिक चरण होता है, जिसमें व्यक्ति सामाजिक एवं शैक्षिक परिवेश से अधिक प्रभावित होता है। 22 से 25 वर्ष आयु वर्ग के युवाओं की संख्या भी उल्लेखनीय है। यह अवस्था रोजगार एवं सामाजिक जिम्मेदारियों से जुड़ी होती है, जिसके कारण इस वर्ग के युवाओं में सामाजिक तनाव एवं असंतोष की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। 26 से 30 वर्ष आयु वर्ग के युवाओं की संख्या अपेक्षाकृत कम पाई गई, किंतु यह वर्ग सामाजिक एवं आर्थिक स्थिरता प्राप्त करने के प्रयास में रहता है। इस प्रकार आयु वर्ग के अनुसार युवाओं के सामाजिक व्यवहार में भिन्नता देखने को मिलती है।

तालिका 2: उत्तरदाताओं की पारिवारिक पृष्ठभूमि पारिवारिक संरचना के आधार पर वर्गीकरण:

परिवार का प्रकार	संख्या	प्रतिशत
संयुक्त परिवार	115	38.33%
एकल परिवार	185	61.67%
कुल	300	100%

विश्लेषण उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि अध्ययन में अधिकांश युवा एकल परिवारों से संबंधित हैं। आधुनिक नगरीय समाज में संयुक्त परिवार व्यवस्था का विघटन देखा जा रहा है, जिसके परिणामस्वरूप पारिवारिक नियंत्रण एवं मार्गदर्शन में कमी आई है। संयुक्त परिवारों में सामाजिक नियंत्रण एवं पारिवारिक सहयोग अधिक पाया जाता है, जिससे युवाओं के व्यवहार पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इसके विपरीत एकल परिवारों में अभिभावकों की व्यस्त जीवनशैली एवं पारिवारिक संवाद की कमी युवाओं में सामाजिक विचलन की प्रवृत्तियों को बढ़ा सकती है।

सुझाव: अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर युवाओं में सामाजिक विचलन की समस्या को कम करने हेतु निम्न सुझाव प्रस्तुत किए जा सकते हैं। सबसे पहले, युवाओं के लिए रोजगार के अवसरों का विस्तार करना आवश्यक है। बेरोजगारी युवाओं में निराशा एवं असंतोष को जन्म देती है, जिससे वे असामाजिक गतिविधियों की ओर आकर्षित हो जाते हैं। सरकार एवं निजी क्षेत्र को युवाओं के लिए कौशल विकास एवं स्वरोजगार योजनाओं को बढ़ावा देना चाहिए।

- पारिवारिक स्तर पर माता-पिता को युवाओं के साथ सकारात्मक संवाद स्थापित करना चाहिए। परिवार में अनुशासन, सहयोग एवं नैतिक मूल्यों का वातावरण युवाओं के व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। माता-पिता को बच्चों की गतिविधियों पर उचित निगरानी रखते हुए उन्हें सही दिशा प्रदान करनी चाहिए।
- शिक्षा प्रणाली में नैतिक शिक्षा एवं जीवन कौशल शिक्षा को विशेष महत्व दिया जाना चाहिए। विद्यालय एवं महाविद्यालय स्तर पर परामर्श सेवाओं को सुदृढ़ किया जाना चाहिए ताकि युवाओं को मानसिक एवं सामाजिक समस्याओं से निपटने में सहायता मिल सके।
- सामाजिक स्तर पर युवाओं के लिए खेलकूद, सांस्कृतिक गतिविधियों एवं सामाजिक सेवा कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए। इससे युवाओं की ऊर्जा सकारात्मक दिशा में उपयोग हो सकेगी तथा उनमें सामाजिक जिम्मेदारी की भावना विकसित होगी।
- नशाखोरी की समस्या को नियंत्रित करने हेतु जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन आवश्यक है। सरकार एवं सामाजिक संस्थाओं को संयुक्त रूप से नशा मुक्ति अभियान चलाने चाहिए तथा युवाओं को नशे के दुष्परिणामों के प्रति जागरूक करना

चाहिए।

- आधुनिक सूचना तकनीक के दुरुपयोग को रोकने हेतु डिजिटल साक्षरता कार्यक्रमों का संचालन आवश्यक है। युवाओं को इंटरनेट एवं सोशल मीडिया के सकारात्मक उपयोग के प्रति जागरूक किया जाना चाहिए। अभिभावकों एवं शिक्षकों को भी डिजिटल माध्यमों के प्रति जागरूक किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध अध्ययन "युवाओं का सामाजिक विचलन – आगरा जनपद के संदर्भ में" युवाओं में बढ़ती सामाजिक विचलन प्रवृत्तियों के कारणों, स्वरूप एवं प्रभावों का विश्लेषण करने हेतु किया गया। अध्ययन के अंतर्गत 18 से 30 वर्ष आयु वर्ग के 300 युवाओं को अध्ययन का आधार बनाया गया। अध्ययन से प्राप्त तथ्यों के विश्लेषण के आधार पर निम्न प्रमुख निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं।

- अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि युवाओं में सामाजिक विचलन की समस्या बहुआयामी स्वरूप की है। सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक एवं सांस्कृतिक कारक इस समस्या को प्रभावित करते हैं। बेरोजगारी, आर्थिक असमानता तथा जीवन स्तर की अस्थिरता युवाओं में निराशा एवं तनाव को जन्म देती है, जिसके परिणामस्वरूप वे असामाजिक गतिविधियों की ओर आकर्षित हो जाते हैं।
- अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि पारिवारिक वातावरण युवाओं के व्यवहार निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जिन युवाओं के परिवारों में पारिवारिक कलह, अनुशासनहीनता एवं माता-पिता का नियंत्रण कमजोर पाया गया, उनमें सामाजिक विचलन की प्रवृत्ति अधिक देखी गई। इसके विपरीत जिन युवाओं को पारिवारिक सहयोग एवं मार्गदर्शन प्राप्त हुआ, उनमें सकारात्मक सामाजिक व्यवहार अधिक पाया गया।
- मित्र समूह का प्रभाव भी युवाओं के सामाजिक व्यवहार को प्रभावित करने वाला महत्वपूर्ण कारक पाया गया। अध्ययन में यह तथ्य सामने आया कि गलत मित्र समूह युवाओं को नशाखोरी, अपराध एवं अन्य असामाजिक गतिविधियों की ओर प्रेरित करता है। सहकर्मी समूह का दबाव कई बार युवाओं को सामाजिक नियमों के विरुद्ध कार्य करने के लिए प्रेरित करता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. सामाजिक सांख्यिकी प्रभाग, राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय, सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली पब्लिश होने तारीख़ 29 जून, 2022
2. सामाजिक विचलन के सिद्धांत समाजशास्त्र का परिचय https://share.google/0f7IP16A3Xr3LTYZo
3. Dewey, (1916)John Democracy and Education Ne York: Macmillan
4. Durkheim, (1938) Émile The Rules of Sociological Method New York: Free Press, Suicide: A Study in
5. Becker,1963 H.S. Outsiders,
6. Goode, 1964 William J. The Family Englewood Cliffs. Prentice Hall,
7. Merton, R.K. (1968) Social Theory and Social Structure.